विषय - यहाँ एक नदी बहती थी

एक नदी की विदाई

देखो बच्चे, ध्यान से देखो
क्या देखती हैं यहाँ
कुछ भी देखती हैं मा?
पर कुछ साल के पहले, यहाँ,
नीले आसमान के नीचे
हरियाली पर्वतों के बीच
बहती थी एक लंबा नदी।
ठंडा पानी से और
छोटी मछलियों से
भरते हुई एक सुंदर नदी।
वह नदी की किनारे पर
खेती करती थी किसान।
पानी पीने केलिए आते थे
जानवरों आसपास घन जंगल से।
विश्राम स्थान था आकाश में
उडनेवाली पक्षियों को।
छोटी छोटी मछलियों के
खेल मैदान थी थे यह नदी।

कितना सुंदर था! कितना मुलायम था!
लेकिन आज उसका हालत क्या हैं?

देखो बच्चे, ध्यान से देखो
रेत भी दिखाई नहीं सकता है नदी की स्थान में।
सुनो बच्चे, रेत में सोई पानी की
बूँदों को रुलाई।
यह रुलाई की कारण कौन है?
कौन है? सोचो तुम।
कोई न परेशान से कहता सकता हूँ
यह रुलाई की कारण मानव है।

स्वार्थ मानव है इसका कारण
अपने हाथों के बल से वह
नाश करती है सब।
पेड़ों, पहाड़ों, जंगलों, नदियाँ
और हमारे प्रकृति माता को भी।

ठंडा पानी से भरा
वह बहती थी।
शुद्ध जल देते वह
सबको देती थी जीवन।
पशुचारकों का और किसान को
वरदान था वह।

ढलती सूरज की प्रिय पुत्री
हँसती चाँद का प्रिय साथी
चमकीला तारों की प्रिय दोस्ती
सबको सब था वह।

अचानक, वह संभव हुआ
वह नदी की आखिरी दिनों
हताशा की या दु:ख का समय
बीती नदी की विदाई।
मानव मलिन चीजों और अशुद्ध पदार्थों
फेंकते हैं उस नदी में।
नदी से रेत चुनकर भी मनुष्य
धन और अपनी सौभाग्य बढ़ती है।

हे ईश्वर! आज यहाँ कुछ भी नहीं
दुस्साहस से नदी में पानी की
एक बूँद भी नहीं।

बच्चे सुनो, ध्यान से सुनो.
अब पीने के लिए भी पानी नहीं।
नदियाँ वरदान हैं प्रकृती की
वह है हमारा जीवन
वह नहीं तो हम भी नहीं।
याद करो, यह सत्य
और पहचान करो
हमारा प्रकृती की प्यार।
प्रकृति माताजी को माफी बताऊँ
और नदी संरक्षण के लिए काम करो।
काम करो प्रकृति की खुशी के लिए....।